

देश के बड़े राज्य नविश आकर्षति करने में पीछे

चर्चा में क्यों ?

देश में औद्योगिकीकरण की दशा कैसी है इसका खुलासा आरबीआई के आँकड़ों से होता है। पछिले पाँच वर्षों (2012-13 से 2016-17) के आँकड़ों के अनुसार भारत के सबसे बड़े राज्य नविश आकर्षति करने के मामले में अन्य राज्यों से पीछे हैं। देश में 62% परियोजनाएँ गुजरात, ओडिशा, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और कर्नाटक में ही चल रही हैं।

सबसे अधिक नविश प्राप्त करने वाले राज्य एवं उद्योग

- नज़ी कॉर्पोरेट नविश पर आरबीआई के अध्ययन के अनुसार राज्यों का हिस्सा निम्न प्रकार से है:-

- गुजरात - 22.7%
- महाराष्ट्र - 8.6%
- आंध्र प्रदेश - 8.2%,
- मध्य प्रदेश - 7.4%
- कर्नाटक - 6.6%
- तेलंगाना - 5.5%
- तमिलनाडु - 4.5%

- देश के सात राज्यों ने 62 प्रतिशत नविश आकर्षति किया है। जबकि शेष नविश 22 राज्यों और 7 केंद्रशासित प्रदेशों में हुआ है।
- आरबीआई के अनुसार, सबसे अधिक नविश ऊर्जा क्षेत्र में हुआ है, लेकिन महाराष्ट्र और तमिलनाडु में निर्माण उद्योग में सबसे अधिक नविश हुआ है जो क्रमशः 54.3 % और 67% है।
- गुजरात में वस्त्र, परिवहन और उसके कल-पुरजे, कर्नाटक में सीमेंट, पुल और सड़क, तेलंगाना में फार्मास्यूटिकल और ड्रग्स में सबसे अधिक नविश हुआ है।

पूंजीगत व्यय में गिरावट

- हालाँकि, आरबीआई ने अपनी रिपोर्ट में चालू वित्त वर्ष में नयोजित परियोजनाओं के पूंजीगत व्यय में एक महत्वपूर्ण गिरावट का खुलासा किया है।
- पूर्ववर्ती वर्षों में स्वीकृत परियोजनाओं के आधार पर योजनाबद्ध कैपेक्स (capex) 2015-16 में 174,400 करोड़ रुपए और 2016-17 में 154,800 करोड़ रुपए के मुकाबले 2017-18 में 69,400 करोड़ रुपए हो सकता है।
- यह वर्ष 2011-12 में 361,800 करोड़ रुपए की पूंजीगत योजना के मुकाबले काफी कम है, जिसके बाद साल-दर-साल कैपेक्स में गिरावट आ रही है।

जीएसटी और वमिद्रीकरण का असर

- जसि तरह से जीएसटी और वमिद्रीकरण के कारण कॉर्पोरेट के प्रदर्शन में गिरावट आई है, उसे देखते हुए यह नहीं लगता कि यह पछिले वर्ष तय कैपेक्स लक्ष्य तक पहुँच पाएगा।
- आम तौर पर, कसि परियोजना पर कैपेक्स कई वर्षों के लिये होता है। उधारदाताओं से वतिततीय सहायता के लिये आवेदन करते समय फर्मों को ऐसे व्यय के लिये प्रस्तावति योजना का संकेत देना आवश्यक होता है।
- यह ज़रूरी नहीं है कि कंपनयिों द्वारा घोषति सभी नविश योजनाएँ पूरी की जाएंगी। पछिले पाँच वर्षों से यह स्पष्ट हो चुका है कि कुछ योजनाएँ केवल कागजों में ही बनी रहती हैं।
- कई कंपनयिों ने वमिद्रीकरण और जीएसटी के कारण अपनी योजनाएँ स्थगति कर दी थी।
- इसके अलावा भारी तनाव वाली परसिंपत्तयिों, दवालिया कार्रवाइयों और प्रावधानों के साथ संघर्ष कर रहे कई बैंक भी उद्योग को साख प्रदान करने में बहुत उत्साह नहीं दिखा रहे हैं।
- आरबीआई के आँकड़े बताते हैं कि जुलाई 2017 को खत्म हुए 12 महीनों के दौरान मध्यम उद्योगों पर बैंकों का बकाया ऋण 7.7 प्रतिशत की गिरावट के साथ 100,500 करोड़ रुपए रह गया है।

